स्व. बाला साहब पूछवाले स्मृति संगीत समारोह

रागों के साथ रस विभोर श्रोता

डॉ. भगवानस्वरूप चैतन्य

तानसेन की नगरी ग्वालियर में शास्त्रीय संगीत की पुरातन परंपरा है। गली-गली में इस कला के प्रति प्रेम उमड़ता दिखाई पड़ता है। विगत दिनों तानसेन कला-वीथिका पड़ाव सभागार में ग्वालियर घराने के महान संगीत मनीषी पं. बाला साहब पूछवाले की स्मृति में एक द्विदिवसीय संगीत समारोह का आयोजन 'राजा भैया पूछवाले संगीत परिषद' के सहयोग से उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत अकादमी भोपाल द्वारा ग्वालियर में आयोजित किया गया।

समारोह का शुभारंभ राजा मानसिंह संगीत विश्वविद्यालय के कुलपति चित्तरंजन ज्योतिषी ने किया। अकादमी के निदेशक उल्हास तैलंग उपस्थित थे। संबोधन में कुलपति श्री ज्योतिषी ने कहा कि स्व. बाला साहब नई पीढ़ी के लिए शास्त्रीय संगीत विद्या के क्षेत्र में सदा प्रेरणा के स्रोत बने रहेंगे।

देर रात तक इस संगीत समारोह में गूंजी स्वर लहरियों का रसिक श्रोताओं ने भरपूर आनंद लिया। विख्यात सितार वादक डॉ. संचारी बक्षी के सितार वादन और पुणे के गायक रघुनंदन पणशीकर के गायन ने श्रोताओं को संगीत रस में सराबोर कर दिया। संगीत संध्या का शुभारंभ डॉ. संचारी बक्षी ने राग यमन के साथ किया। तीन ताल में अलाप, जोड़ एवं झाला बजाया। साथ ही विलंबित मध्य एवं द्रुत लय में निबद्ध रचनाएँ प्रस्तुत कीं। राग यमन के पश्चात सुश्री बक्षी ने बांग्ला धुन 'भटयाली' के साथ सितार वादन का समापन किया। सुश्री बक्षी के साथ तबले पर संगत जबलपुर के अनिल मोघे ने की।

इस सफल प्रस्तुति के बाद पुणे के रघुनंदन पणशीकर ने जयपुर अतरौली राजघराने की खास राग आधारित रचना 'बरज रही बाहू' की प्रस्तुति दी। इसके बाद स्व. मोगूबाई कुरडीकर रचित बंदिश 'बनवारी श्याम' की प्रस्तुति से संगीत रसिकों को बाँधे रखा। श्री पणशीकर के साथ हारमोनियम पर डॉ. विवेक बनसोड़ तथा तानपूरे पर विवेक जैन और जयकिशन तलरेजा एवं तबले पर आनंद मसूरकर ने संगत की। कार्यक्रम का संचालन अशोक आनंद तथा आभार प्रदर्शन संगीत परिषद के अध्यक्ष हनुमंत मजूमदार ने किया।

समारोह के दूसरे दिन की शुरुआत गायिका गौरी पाठारे के रागश्री से हुई। उनकी झूमरताल में 'वारी जाऊँ रे' गीत की पहली ही प्रस्तुति इतनी जोरदार थी कि सभागार तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। श्रोता गायन सुनकर न केवल झूम रहे थे, बल्कि रागों के अनुरूप उनके हाथों का संचालन और रस विभोर अवस्था में कलाकार के साथ तादात्म्य देखते ही बनता था। इसके बाद सुश्री पाठारे ने तीन ताल में निबद्ध छोटी बंदिश 'चलो री माई रामसिया दर्शन को' गीत की प्रस्तुति दीं। पाठारे के मिठास भरे गीतों ने उनके उस्ताद सुप्रसिद्ध संगीतकार मोइउद्दीन डागर की स्मृतियाँ ताजा कर दीं। इन्होंने मध्यलय और रूपक की बंदिश राग भूप में प्रस्तुत की। इसके बोल थे 'जब ही सब नीर' इसके पश्चात इन्होंने टप्पे अंग की बंदिश 'नू मन जोबन मान दावे' गाकर श्रोताओं का हृदय जीत लिया। सुश्री पाठारे ने अपनी मधुर आवाज में 'जब याद पिया की आए' गीत पेश किया तो श्रोतागण भी गायिका के साथ सुर में सुर मिलाने लगे। इनके साथ हारमोनियम पर विवेक बनसोड़, तबले पर अनिल मोघे, तानपूरे पर जयकिशन तलरेजा और विवेक जैन ने संगत की।

इसके बाद सरोद वादक प्रदीप कुमार बारोट (मुंबई) ने राग विहाग बजाया जो विलंबित और द्रुतलय में तीन ताल में निबद्ध था। इसी क्रम में उन्होंने अपनी उंगलियों के संतुलित प्रयोग से रूपक तीन ताल में निबद्ध रागदेश बड़े ही सुरीले अंदाज में पेश किया। सरोद की तानों पर आरोह-अवरोह की स्वर तरंगों पर रसिक श्रोताओं के चेहरे के भाव भी बदलते दिखाई दे रहे थे। रस में डूबे रसिक श्रोताओं का जुड़ाव शास्त्रीय संगीत परंपरा के उज्ज्वल भविष्य की गवाही दे रहा था। इस स्वरांजलि सभा का समापन श्री बारोट के शिवरंजनी राग से हुआ। इनके साथ तबले पर श्री रामेन्द्र सिंह सोलंकी ने संगत की, जिसे सभी ने खूब सराहा। सचिव डॉ. प्रभाकर गोहदकर के आभार के साथ यह संगीत संध्या समाप्त हुई।

❖